रामधारी सिंह दिनकर

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 ई० में सिमरिया, बेगूसराय (बिहार) में हुआ और निधन 24 अप्रैल 1974 ई० में । उनकी माँ का नाम मनरूप देवी और पिता का नाम रवि सिंह था । दिनकर जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव और उसके आस-पास हुई । 1928 ई० में उन्होंने मोकामा घाट रेलवे हाई स्कूल से मैट्रिक और 1932 ई० में पटना कॉलेज से इतिहास में बी० ए० ऑनर्स किया । वे एच० ई० स्कूल, बरबीघा में प्रधानाध्यापक, जनसंपर्क विभाग में सब-रजिस्ट्रार और सब-डायरेक्टर, बिहार विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर एवं भागलपुर विश्वविद्यालय में उपकुलपति के पद पर रहे ।

दिनकर जी जितने बड़े कवि थे, उतने ही समर्थ गद्यकार भी । उनकी भाषा कुछ भी छिपाती नहीं, सबकुछ उजागर कर देती है । उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – 'प्रणभंग', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरुक्षेत्र', रश्मिरथी', 'नीलकुसुम', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'हारे को हरिनाम' आदि । (काव्य-कृतियाँ) एवं 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर', 'संस्कृति के चार अध्याय', 'काव्य की भूमिका', 'वट पीपल', 'शुद्ध कविता की खोज', 'दिनकर की डायरी' आदि (गद्य कृतियाँ) । दिनकर जी को 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी एवं 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए । उन्हें भारत सरकार की ओर से 'पद्मविभूषण' से भी सम्मानित किया गया था । वे राज्यसभा के सांसद भी रहे ।

दिनकर जी उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि हैं । वे भारतेन्दु युग से प्रवहमान राष्ट्रीय भावधारा के एक महत्त्वपूर्ण आधुनिक कवि हैं । कविता लिखने की शुरुआत उन्होंने तीस के दशक में ही कर दी थी, किंतु अपनी संवेदना और भावबोध से वे चौथे दशक के प्रमुख कवि के रूप में ही पहचाने गये । उन्होंने प्रबंध, मुक्तक, गीत-प्रगीत, काव्यनाटक आदि अनेक काव्यशैलियों में सफलतापूर्वक उत्कृष्ट रचनायें प्रस्तुत की हैं । प्रबंधकाव्य के क्षेत्र में छायावाद के बाद के कवियों में उनकी उपलब्धियाँ सबसे अधिक और उत्कृष्ट हैं । भारतीय और पाश्चात्य साहित्य का उनका अध्ययन-अनुशीलन विस्तृत एवं गंभीर है । उनमें इतिहास और सांस्कृतिक परंपरा की गहरी चेतना है और समाज, राजनीति, दर्शन का वैश्विक परिप्रेक्ष्य-बोध है जो उनके साहित्य में अनेक स्तरों पर व्यक्त होता है ।

राष्ट्रकवि दिनकर की प्रस्तुत कविता आधुनिक भारत में जनतंत्र के उदय का जयघोष है । सदियों की देशी-विदेशी पराधीनताओं के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति हुई और भारत में जनतंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा हुई । जनतंत्र के ऐतिहासिक और राजनीतिक अभिप्रायों को कविता में उजागर करते हुए कवि यहाँ एक नवीन भारत का शिलान्यास सा करता है जिसमें जनता ही स्वयं सिंहासन पर आरूढ़ होने को है । इस कविता का ऐतिहासिक महत्त्व है ।

जनतंत्र का जन्म

सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है ।

जनता ? हाँ, मिट्टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े-पाले की कसक सदा सहनेवाली,
जब अंग-अंग में लगे साँप हो चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द कहने वाली ।

जनता ? हाँ, लम्बी-बड़ी जीभ की वही कसम,
''जनता, सचमुच ही, बड़ी वेदना सहती है ।''
''सो ठीक, मगर, आखिर, इस पर जनमत क्या है ?''
''है प्रश्न गूढ़; जनता इस पर क्या कहती है ?''

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दुधमुँही जिसे बहलाने के
जन्तर-मन्तर सीमित हों चार खिलौनों में ।

लेकिन, होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढ़ाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है ।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है;
जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है ।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अन्धकार

बीता; गवाक्ष अम्बर के दहके जाते हैं;
यह और नहीं कोई, जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते आते हैं।

सबसे विराट जनतंत्र जगत का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए तू किसे ढूँढ़ता है मूरख,
मन्दिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में ?
देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदंड बनने को हैं,
धूसरता सोने से शृंगार सजाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि की दृष्टि में समय के रथ का घर्घर-नाद क्या है ? स्पष्ट करें ।
2. कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन किस रूप में करता है ?
3. कवि के अनुसार किन लोगों की दृष्टि में जनता फूल या दुधमुँही बच्ची की तरह है और क्यों ? कवि क्या कहकर उनका प्रतिवाद करता है ?
4. कवि जनता के स्वप्न का किस तरह चित्र खींचता है ?
5. विराट जनतंत्र का स्वरूप क्या है ? कवि किनके सिर पर मुकुट धरने की बात करता है और क्यों ?
6. कवि की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं और वे कहाँ मिलेंगे ?
7. कविता का मूल भाव क्या है ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ?
8. **व्याख्या करें -**

    (क) सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
    मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;

    (ख) हुँकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
    साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है;
    जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ ?
    वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है ।

कविता के आस-पास

1. हिंदी में राष्ट्रकवि का सम्मान किन-किन कवियों को प्राप्त हुआ है ? कौन-से कवि हैं जिन्हें आप राष्ट्रकवि कहना चाहेंगे और क्यों ?
2. दिनकर उत्तर छायावाद के कवि हैं । उत्तर छायावाद क्या है ? बिहार के अन्य उत्तर छायावादी कवियों की सूची शिक्षक की सहायता से बनाएँ ।
3. दिनकर का एक गद्य पाठ बारहवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक 'दिगंत भाग-2' में संकलित है । इस पाठ को उपलब्ध कर पढ़ें एवं अपने मित्रों तथा शिक्षकों से विमर्श करें ।

भाषा की बात

1. **निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –**

    सदी, राख, ताज, सिंहासन, कसक, दर्द, कसम, जनमत, फूल, भूडोल, भृकुटी, काल, तिमिर, नाद, राजप्रासाद, मंदिर

2. निम्नांकित के लिंग-निर्णय करें –

ताव, दर्द, वेदना, कसम, हुँकार, बवंडर, गवाक्ष, जगत, अभिषेक, शृंगार, प्रजा

3. कविता से सामासिक पद चुनें एवं उनके समास निर्दिष्ट करें ।

शब्द निधि

नाद	:	स्वर, ध्वनि
गूढ़	:	रहस्यपूर्ण
भूडोल	:	धरती का हिलना-डोलना, भूकंप
कोपाकुल	:	क्रोध से बेचैन
ताज	:	मुकुट
अब्द	:	वर्ष, साल
गवाक्ष	:	बड़ी खिड़की, दरीचा
तिमिर	:	अंधकार
राजदंड	:	राज्याधिकार, शासन करने का अधिकार
धूसरता	:	मटमैलापन

X X X